शिक्षा में नई सदी की चुनौती : ऑनलाइन – शिक्षा

* विजय शंकर शर्मा
* * जितेन्द्र सिंह गोयल

शिक्षा के तीन परम्परागत रूप अभी तक हमारे सामने हैं– स्कूल, कॉलेज जाकर शिक्षा प्राप्त करना, किसी बोर्ड या विश्वविद्यालय से पत्राचार–पाठ्यक्रम के तहत् पढाई करना और स्कूल, कॉलेज जाए बिना निजी परीक्षार्थी के रूप में परीक्षा देना इस कड़ी में अब एक और रास्ता खुला है– 'ऑनलाइन–शिक्षा' यानी इन तीनों के गुणों को समाहित करते हुए टेक्नोलॉजी से सज्जित–शिक्षा। इस शिक्षा का मतलब है– इंटरनेट के जरिए कम्प्यूटरी ज्ञान के तमाम औजारों से लैस शिक्षा अर्थात् स्कूल, कॉलेज एवं विश्वविद्यालय न जाकर, विद्यार्थी इंटरनेट के माध्यम मल्टी–मीडिया से सज्जित पाठों को न केवल पढ़कर, बल्कि दिशापरक ऑनलाइन परामर्श प्राप्त कर, सतत् स्वरूप में ज्ञान को लेते हुए, घर बैठे ऑनलाइन परीक्षा देकर डिग्री हासिल करता है। कम्प्यूटर व सूचना प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षा की इस अवधारणा में अब ताजातरीन सोशल–नेट–बैंकिग साइट्स अर्थात् सोशल–मीडिया के दस्तक देने पर शिक्षा की विकास–यात्रा को जहाँ एक और अनेक नवीन आयाम व मददगारियाँ मिली हैं, तो वहीं दूसरी ओर कुछ हानिप्रद पहलू भी उठ खड़े हुए हैं जिन पर चिन्तन करना सामयिक और समीचीन होगा।

प्रस्तावना :

शिक्षा वह माध्यम है, जिस पर किसी देश की प्रगति निर्भर करती है। विश्व में शिक्षा के इस बदलते स्वरूप के चलते अब कोई भी एकलव्य' बन सकता है। शिक्षा की इस वर्चुअल (आभासी) दुनियाँ में बड़ी आसानी से पाठ्यक्रम, अध्ययन सामग्री एवं गुरु के साथ–साथ डिग्री देने वालों को तलाशा जा सकता है। शिक्षा के इस नव नवेलेपन में आज सवाल हैं, सवालों के हल हैं, संवाद हैं, वाद हैं, विवाद हैं, बहस हैं, सूचना है, ज्ञान है, विज्ञान है,

* प्रवक्ता, शिक्षक–शिक्षा विभाग डी0वी0 कालेज, उरई
** जूनियर रिसर्च फैलो, (शिक्षा विभाग) लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ,

सलाह है, मशविरा है, खुलापन है, लचीलापन है, सापेक्षिक समय है, सापेक्षिक स्थान है, हर आयु एवं वर्ग का विद्यार्थी है, तुरन्त प्रतिक्रिया के साथ तुरन्त ही परिणाम है इंटरनेट के व्यापक विस्तार के चलते अब शिक्षा में भी मानो सब कुछ तुरन्त हो रहा है, अर्थात इंस्टेंट (फटाफट), तुरन्तवाद के इस उत्साह ने इंटरनेट की दुनिया में एक विशिष्ट शैक्षिक–जोश भर दिया है, जिसके चलते ज्ञान व सूचनाएं अब मुक्त हैं, असंपादित हैं, सम्पादन की जिम्मेदारी आपकी है, आपका एक सवाल, जवाब, सुझाव या विचार, एक कोलाहल या एक क्रान्ति भी बन सकता है। जाहिर है कि ज्ञान की प्राप्ति और किसी विषय में गहराई से अध्ययन के लिए अब आवश्यक नहीं कि शिक्षा के पारम्परिक एवं औपचारिक साधनों की शरण ली जाए, आज ऑनलाइन कम्यूनिटीज पर यदि लगन के साथ प्रयास किया जाए, तो कोई भी विद्यार्थी किसी भी विषय में महारत हासिल कर सकता है और ऐसी प्रतिष्ठा अर्जित कर सकता है, जिसकी सम्भावनाओं का कहीं कोई छोर नहीं है।

दूरवर्ती शिक्षा / पत्राचार शिक्षा :

दूरस्थ शिक्षा ऐसी शिक्षा प्रणाली है, जिसमें ज्ञानार्जन हेतु शिक्षण सामग्री डाक / इलेक्ट्रॉनिक संचार माध्यमों द्वारा भेजी जाती है। छात्र मुद्रित तथा इलेक्ट्रॉनिक माध्यम द्वारा स्व प्रेरणा तथा स्वगति से अध्ययन करता है तथा आंशिक ज्ञानार्जन सम्पर्क सत्र के मध्य कक्षा–शिक्षण द्वारा सम्पन्न होता है। इस शिक्षा प्रणाली में छात्रों की कठिनाइयां परामर्श कक्षाओं के माध्यम से दूर की जाती हैं।

दूरस्थ शिक्षा में अधिगम का स्थान, पहुँच, विषयों का चयन, अनुदेशन रचनाओं में भिन्नता, शिक्षा यान्त्रीकरण के प्रतिपादन में लचीलापन और छात्रों को अपनी क्षमता के अनुसार सीखने का अवसर प्रदान किया जाता है। 'दूरस्थ–शिक्षा में बहु–माध्यमों का प्रयोग किया जाता है, जैसे मुद्रित सामग्री, श्रव्य–दृश्य कैसेट एवं सीडीज, रेडियो, दूरदर्शन कार्यक्रम, कम्प्यूटर एवम् इन्टरनेट आदि। मुक्त दूरस्थ–अधिगम प्रणाली का व्यापक

विकास, विशेष रूप से इन्दिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों का व्यापक विस्तार शिक्षण तथा प्रशिक्षण के क्षेत्रों में अपना विशिष्ट प्रभाव बनाए हुए है।

यद्यपि भारत में दूरवर्ती शिक्षा कार्यक्रम उपलब्ध हैं। इन्दिरा गांधी मुक्त वि0वि0 द्वारा पाठ्यक्रम डाक से भेजे जाते हैं। विभिन्न केन्द्रों पर सेमीनार आयोजन के साथ साथ दूरदर्शन पर कार्यक्रम भी प्रसारित किये जाते हैं। वर्तमान में पंजाब टेक्निकल यूनीवर्सिटी व कुछ अन्य विश्वविद्यालयों द्वारा व्यावसायिक और प्रौद्योगिकी आधारित विषयों में दूरवर्ती शिक्षा कार्यक्रम सफलतापूर्वक चलाये जा रहे हैं। इन संस्थाओं के सराहनीय प्रयास के पश्चात भी भारत में दूरवर्ती शिक्षा कार्यक्रम के विकास व प्रसार की आवश्यकता है। प्रौद्योगिकी के विकास के कारण नयी संभावनाएं खुली हैं और सम्पूर्ण केबल, सेटेलाइट संचार वायरलेस और ब्रॉडबैंड जैसी अनिवार्य तकनीकें उपलब्ध हैं। आवश्यकता है कि दूरवर्ती शिक्षा नये और आधुनिक तरीकों के द्वारा अधिक लोगों तक प्रभावशाली ढंग से कम से कम समय में पहुँचे। देश में दूरवर्ती शिक्षा कार्यक्रमों में कुछ तकनीकी घटको को विकसित करने की आवश्यकता है।

वर्चुअल (सांकेतिक) कक्षा और दूरस्थ शिक्षाः

वर्तमान समय में संचार तकनीकी में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई है। इसे दूरवर्ती शिक्षा कार्यक्रमों में वर्चुअल या सांकेतिक कक्षा को शामिल किया जा सकता है। इससे छात्र मात्र ध्यानपूर्वक सुनेंगें ही नहीं, बल्कि साथ ही अध्यापक सें प्रश्न पूछना भी सम्भव होगा। परन्तु शिक्षक का योग्य व प्रतिभावान होना आवश्यक है। दूर शिक्षा के द्वारा एक साथ किसी क्षेत्र की कई कक्षाओं को पढ़ाया जा सकता है।

ई0 लर्निंगः

शिक्षा को सर्वसुलभ बनाने के लिए ई0 लर्निंग महत्वपूर्ण तकनीकी है। इसके द्वारा पाठ्यक्रम की विषयवस्तु को इंटरनेट के द्वारा प्राप्य बनाया जा सकता है। पाठ्य सामग्री हर समय ऑन लाइन उपलब्ध होगी और शिक्षार्थी

तक स्वतंत्र पहुंचेगी। किसी छात्र द्वारा मांगने पर पाठ्यक्रम उस तक पहुचाने की भी सुविधा होगी। ई0 लर्निंग छात्र को स्वतंत्र शिक्षार्थी बनने में सहायता करती है व सक्षम बनाती है।

डिजिटल पुस्तकालयः

पुस्तकालयों को डिजिटल बनाने की आवश्यकता है। दूरवर्ती शिक्षण कार्यक्रमों व विश्वविद्यालयों के लिए पुस्तकें उपलब्ध होने की सुविधा होनी चाहिए। किसी विशेष पुस्तक पढ़ने का इच्छुक छात्र ऑन लाइन वहां तक पहुंच सके। डिजिटल पुस्तकालय के लिए टेली एजूकेशन के माध्यम से सॉफ्टवेयर एक महत्वपूर्ण साधन हो सकता है। उनकी कल्पना है कि यदि गणित का अध्यापक शहर की कक्षा में पढ़ा रहा है तो वह राज्य के सुदूर क्षेत्रों के छोटे गांवो के छात्रों द्वारा सुना व देखा जा सकता है।

वर्चुअल या सांकेतिक विश्वविद्यालय :

भारत के सभी विश्वविद्यालयों और दूसरे शिक्षण संस्थानों के नेटवर्किंग के माध्यम से एक वर्चुअल या सांकेतिक विश्वविद्यालय की संकल्पना दी है। इसके द्वारा छात्र दिल्ली में किसी विद्वान द्वारा दिये जा रहे व्याख्यान को चेन्नई में स्थित अपनी कक्षा में बैठकर देख–सुन सकते हैं। प्रश्न पूछ सकते हैं व तत्परता दिखा सकते हैं। कम्प्यूटर पर जाकर आवश्यक पुस्तकों का आर्डर दे सकते हैं। यदि वि0वि0 में पुस्तक उपलब्ध नहीं है तो डिजिटल पुस्तकालय के माध्यम से कम्प्यूटर पर बटन दबाकर पुस्तक अपने कम्प्यूटर पर देख सकते हैं। महीनों बाद, वही व्याख्यान पुनः देख सकते हैं। वर्चुअल वि0वि0 इस स्वप्न को साकोर रूप प्रदान करने में सक्षम होंगें।

इस दिशा के प्रत्यक्ष प्रश्न ये हैं कि सोशल–नेटवर्किंग के क्या मायने हैं? क्या ऑनलाइन शिक्षा की अवधारणा में सोशल–नेटवर्किंग अर्थात् सोशल– मीडिया का प्रयोग करना अच्छा है या बुरा? यदि शिक्षा के उद्देश्य ज्ञानार्जन, ज्ञान के एक या विविध क्षेत्रों की गहरी समझ पैदा करना और उसमें प्रवीणता, सृजनात्मकता, नवाचार एवं सम्यक मूल्यों का संवर्द्धन

करना है, तो निःसंदेह सोशल–नेटवर्किंग साइट्स से लाभ होता है क्योंकि गहरी समझ के लिए संवाद और सहयोग दो अनिवार्य घटक है और इन दोनों घटकों के लिहाज से सोशल–साइट्स उपयुक्त मंच है। बड़ा फायदा यह है कि सोशल–साइट्स विद्यार्थियों में विवेचना, बहस, चर्चा, प्रदर्शन, प्रकटीकरण एवं अभिव्यक्ति आदि की शक्ति को मनोवैज्ञानिक दृष्टि से नवीनता एवं विविध उद्दीपक लिए हुए विकसित कर सकती है, इसीलिए ही मुक्त विश्वविद्यालयों द्वारा टेलीविजन की शक्ति को अध्ययन के साथ जोड़ा जाता है। अतः कहा जा सकता है कि सोशल–नेटवर्किंग द्वारा शिक्षा के ज्ञानार्जन, स्व–संतोष, स्व–विकास, स्व–चेतना एवं आनन्द प्राप्ति जैसे सभी लक्ष्यों की आपूर्ति की जा सकती है, पर शर्त यह है कि इनका उपयोग गांभीर्य व विवेक के साथ होना चाहिए।

विद्यालयों में निश्चित पाठ्यक्रम के माध्यम से ज्ञान के विभिन्न बिन्दुओं को संग्रह कर, उनके अनेक पक्षों को परस्पर जोड़कर, शिक्षकों द्वारा परोसा जाता है इसी प्रकार ऑनलाइन शिक्षा की साइट्स भी अपने पाठकों या हितधारियों को ज्ञान के विविध क्षेत्रों व उनके बिन्दुओं को जोड़ने में मदद करता है, अर्थात् यह विद्यार्थियों को अध्ययन की विविधता, चित्रमय व लाइव प्रदर्शन के साथ–साथ बहु–सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है। शिक्षा मनोवैज्ञानिक हार्वड गार्डनर के अनुसार, ''अच्छी समझ के लिए विद्यार्थियों को अपने ज्ञान को विविध रूपों में व्यक्त करने के अवसर देना, ज्यादा अच्छा होता है'' प्रकृति से मल्टी–मीडिया होने के कारण यह विद्यार्थियों को अभिव्यक्ति व ज्ञान–प्रदर्शन के लिहाज से टेक्स्ट (लिखित सामग्री ब्लाग) प्रस्तुतिकरण (स्लॉइड–शेयर) वीडियो (यू–ट्यूब) जैसे अनेक सहज माध्यम उपलब्ध कराता है। इस प्रकार की पढ़ाई से विद्यार्थियों में कुछ सृजनात्मक करने का आत्मविश्वास तो बढ़ेगा ही साथ ही उनमें स्वायत्तता व स्व–प्रेरणा के चलते स्व–हितों से बड़ा कुछ करने की उत्कण्ठा भी पैदा होगी।

विद्यार्थियों की उपलब्धि का आकलन उन्हीं के प्रदर्शन में छुपा होता है, अनौपचारिक व अप्रत्यक्ष आकलन, औपचारिक आकलन से बेहतर होता

है। इसमें किसी प्रकार की परीक्षा का भय नहीं होता, अतः ऑनलाइन शिक्षा का अदृश्य मूल्यांकन विद्यार्थियों के मनोबल को कुंठित नहीं करेगा, अपने आकलन के प्रति वे स्वतन्त्र रूप से प्रतिक्रिया भी दे सकते हैं। विविध स्त्रोतों से दिशापरक सुझाव प्राप्त कर सकते हैं। स्पष्ट है कि 'ऑनलाइन रूपी शिक्षा' के आयाम में विद्यार्थियों की उच्चस्तरीय भागीदारी सुनिश्चित् है जो उनके सर्वांगीण–विकास के लिए अनिवार्य व आवश्यक है।

ऑनलाइन आधारित शिक्षा का विशिष्ट फायदा यह है कि शिक्षक, विद्यार्थी एवं अभिभावक अपने–अपने व मिश्रित संघ बनाकर, समस्या–समाधान व सृजनाओं को साझा कर सकते हैं। शैक्षिक–प्रबन्धन इन मंचों के जरिए सशक्त जन–सम्पर्क व प्रतिष्ठा अर्जित कर सकता है। अनेकानेक शिक्षकों के लेख आदि–साइट्स पर लोक–प्रिय व प्रसिद्ध हैं, जिन्हें लाखों विद्यार्थी ऑनलाइन अपना रहे हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में इटरनेट–साइट्स के प्रयोग के संशयवादियों (आलोचकों) में बहुत सारे शिक्षक व अभिभावक शाामिल हैं, जो यह मानते हैं कि इन साइट्स पर ध्यान बाँटने वाली सामग्रियो की भीड़ जमा है जिससे विद्यार्थियों पर अवांछित व बुरा प्रभाव पड़ेगा और वे अपने मूल लक्ष्य से भटक जाएंगे प्रसिद्ध अमरीकी लेखक निकोलस कार का मानना है कि ''इंटरनेट का लम्बा व सतत् प्रयोग जहाँ एक और तथ्यों की पहचान और छान–बीन की जन्मजात् योग्यता को सुधारता है, वहीं दूसरी और यह ध्यान केन्द्रित करने और सोचने की बौद्धिक क्षमताओं को क्षीण कर देता है''। ऐसा व्यवहार में भी कई बार देखा गया है कि जो शिक्षाकर्मी अध्ययन करवाने में पॉवर पॉइन्ट प्रस्तुतिकरण का सहारा लेते हैं, जब तक पॉवर है, तब तक तो ठीक है, जैसे ही किसी कारण से पॉवर कट हुई न कि उनके व्याख्यान का प्रवाह खण्डित हो जाता है, कमोवेश यही हाल विद्यार्थियों का भी है, हर अध्ययन व प्रोजेक्ट निर्माण सम्बन्धी कार्यों में गूगल या इन साइट्स को बृहस्पति मानकर, उनके द्वारा अध्ययन को इतिश्री प्रदान करने का चलन बढ़ता जा रहा है, जिसके चलते पुस्तकालयों में जाने एवं विविधि

शैक्षिक–संदर्भों का अवलोकन करने की प्रवृत्ति आज शिक्षकों व विद्यार्थियों दोनों में क्षीण होती जा रही है। इसके अलावा इसकी सामग्रियों की गुणवत्ता की पहचान छानबीन और उनके सही सम्पादन का कार्य क्या विद्यार्थी–वर्ग सही मायने में कर पाएगा यह भी एक विचारणीय विषय है।

शिक्षा में ऑनलाइन शिक्षा को सम्मिलित करने के प्रश्न पर इसके गुण व दुर्गुणों के अवलोकन के पश्चात यही कहा जा सकता है कि वर्तमान समय की आवश्यकता व हितधारियों की मांग के चलते इसकी प्रबल आवश्यकता है। इसकी उपयोगिताओं को नकारा नहीं जा सकता। अतः इसे शिक्षा के साधन के रूप में स्वीकार कर केवल विकास एवं ज्ञान के साधन के रूप में इस्तेमाल किया जाए तो अच्छा है। इसलिए हमें शिक्षा में इसके प्रयोग के हानिप्रद पहलुओं के प्रति न केवल सतत् सचेत रहना होगा बल्कि शिक्षा के क्षेत्र में इसके नए व रचनात्मक पहलुओं को पुरजोर दिशा प्रदान कर अनेकानेक फायदे भी लेने होंगे। नेटवर्किंग की दुनिया में वार्तालाप सहयोग, मित्रता, सामंजस्य, वैश्विक पहुँच अपेक्षा पर खरा उतरने और कम लागत पर शिक्षा की जो सम्भावनाए निहित हैं उन्हें यदि शिक्षण और प्रशिक्षण का हिस्सा बनाया जाए तो क्या हर्ज है? वैसे भी देखा जाए तो नेटवर्किंग एक प्रकार से सम्प्रेषण का साधन है यदि उसका कोई बुरा व विध्वंसात्मक प्रयोग करता है तो इसमें वे साधन दोषी नहीं, बल्कि प्रयोग कौशल में खामी व प्रयोगकर्ता दोशी है। अतः सोशल मीडिया के सम्यक् प्रयोग–प्रबन्धन द्वारा शिक्षा की विकास–यात्रा को असीम ऊँचाइयाँ प्रदान की जा सकती है पर शर्त यह है कि उसे शिक्षा के क्षेत्र में एक चुनौती के रूप में मानकर उसके अच्छे प्रयोग की शोधन प्रक्रिया को जारी रखा जाए।

सन्दर्भ –ग्रन्थ सूची

गुप्ता, एस.पी. और अलका गुप्ता. (2010) सूचना प्रौधोगिकी एवं शिक्षा : एक विमर्श. इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन.

गुप्ता, एस.पी. और अलका गुप्ता (2010) .मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा. इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन.

शर्मा, आर.ए. (2010). शिक्षा के तकनीकी आधार. मेरठ : आर. लाल बुक डिपो.
www.boardofstudies.nsw.edu.au (accessed 11 July 2013)
www.teach-ict.com (accessed 10 August 2013)
www.ictonline.com (accessed 11 August 2013)